किताबों के साथ चलते–चलते...

अलका तिवारी

साहित्य, बच्चों को निर्दोष ख़ुशियाँ देने, उनके व्यक्तित्व को सँवारने, और उनमें ख़ुद-से पढ़ने की आदत बनाने का एक मुख्य ज़रिया है। इस लेख में लेखिका बच्चों के साथ किताबों पर काम करने के दौरान कविता पढ़ाने के क्रम में ऐसे तरीक़े अपनाती हैं जिनसे बच्चे जीवन की जटिलताओं और वास्तविकताओं को जान-समझ सकें। वे समाज में फैली असमानता, हिंसा, जंग, भेदभाव, नफ़रत और ग़ुलामी जैसी विसंगतियों पर चर्चा करते हैं, और इनके कारणों को पहचानने व समाधान में अपनी भूमिका तलाशते हैं। बच्चे कविता-कहानियों के साथ गहराई से जुड़ते हैं, और वैचारिक रूप से समृद्ध होते हैं। लेखिका द्वारा अपनाए गए ये तरीक़े और अनुभव इस लेख में दर्ज हैं। -सं.

किताबें हर उम्र में, एक अच्छे पाठक के रूप में तो गढ़ती ही हैं, साथ ही भाषाई नज़रिए से भी परिष्कृत करती हैं। लेकिन यह जानने के बावजूद, कि किताबें पढ़ने वालों को अलग-अलग मायनों में परिष्कृत कर सकती हैं, हर उम्र के लोगों में किताबों के उपयोग का दायरा काफ़ी सीमित है।

एक शिक्षक के नज़रिए से देखा जाए तो किताबों के मायने बहुत व्यापक और विस्तृत हैं। बच्चों के साथ मैंने लाइब्रेरी की किताबों को पढ़ना सिखाने पर दो छोटे समूहों में काम किया। एक समूह में 12 बच्चे थे और दूसरे में आठ। इस काम को करते हुए समझ बनी कि किताबों को बच्चों के साथ कैसे काम में लिया जाए।

बने हुए समूहों के अनुसार ही यह निर्धारित होता कि काम क्या होगा। कुछ बच्चों को उनके स्तर के अनुसार पुस्तक चुनने में मदद की जाती, वहीं कुछ को ऐसी पुस्तकें दी जातीं कि वे बस पढ़ने का मज़ा लेना सीख सकें। कुछ बच्चों को केवल ये कहकर छोड़ना होता कि तुम ही चुनो तुम्हें क्या पढ़ना चाहिए। पढ़ने के बाद, इसमें हम सबके लिए क्या है, ये हम सब तुमसे सुनेंगे! क्योंकि भरोसा था कि उन्हें ये ज़िम्मेदारी लेना बख़ूबी आता है। और ये बच्चे इन्हें पढ़ते, और पढ़ने के बाद अपनी-अपनी समझ के अनुसार पढ़ी हुई पुस्तक की घटना, कहानी, इसके मूल भाव व इसपर अपने विचारों को समूह में साझा करते। जैसा कि मैंने बताया कभी-कभार कुछ समूहों के बच्चों के लिए अपनी कक्षा के स्तरानुरूप पुस्तक चुनने का निर्देश होता, पर साथ ही बच्चों को अपनी पसन्द से चुनने का मौक़ा भी होता। और तब कई बच्चों के विचारों के ज़रिए कुछ विषयों पर सार्थक चर्चा भी होती। कुछ बच्चों को पढ़ने का मज़ा लेने के लिए पढ़ना होता, वहीं कुछ इस मज़े के जादू को और शिद्दत से डुब्बक-डूब होकर तैरने-उबरने की क़ाबिलियत के लिए पढ़ते, तो कुछ भाषाई दृष्टि से अलग-अलग लेखन शैलियों से रूबरू होने और ख़ुद कह पाने का हुनर गढ़ने के लिए पढ़ते। ख़ैर, इस दौरान मुझे मेरे इन दोस्तों को थोड़ा और क़रीब से पढ़ पाने का मौक़ा मिला। किताबों के साथ काम के इस

सफ़र के दौरान हुए अवलोकनों से कुछ इन अंशों को साझा कर रही हूँ, जो बच्चों के प्रति मुझे और उम्मीद से भरते हैं...

- कक्षा 8 की अंकिता ने खिलाड़ी दीपा कर्माकर की जीवनी, इस पुस्तक को पढ़ने के लिए चुना। इससे पहले कोई भी बच्चा इस पुस्तक को नहीं चुनना चाहता था। दो दिन बाद जब अंकिता ने इस पुस्तक के अनुभव समूह में साझा किए, तब सभी को पता चला कि सामान्य परिवार की एक आम-सी लगने वाली लड़की अपने सपने के लिए किस तरह नियमित अभ्यास और खान-पान का ध्यान रखते हुए अपने भीतर खेल कौशल को विकसित करती है। लड़कियों के प्रति वह लोगों की सोच को भी चुनौती देती है। जब अंकिता ने इस किताब के बारे में बताया, तब बातचीत में बच्चों ने यह केन्द्रित किया कि जीवन का कोई भी काम हो, वह अनुशासन की माँग करता है। अनुशासन से हम ख़ुद को व्यवस्थित करते हैं, और किसी भी सपने को हासिल कर सकते हैं। इस बातचीत के बाद समूह के हर बच्चे ने इस पुस्तक को बारी-बारी से पढ़ा। मेरे लिए यह अनुभव बड़ा चकित करने वाला था कि आख़िर इस पुस्तक के प्रति बच्चों का नज़रिया एकदम उलट कैसे हो गया! यहाँ मैंने पाया कि बातचीत के ज़रिए बच्चे पुस्तक के मूल भाव को समझ पाए, ख़ुद से जोड़ पाए, और यह पुस्तक बहुतों के मन के बिलकुल क़रीब हो गई।
- रवीन्द्रनाथ ठाकुर (टैगोर) द्वारा लिखित *राजा का न्याय* पुस्तक रंगविहीन और शब्दों से भरी थी। और शायद इसी कारण बच्चों को आकर्षित करने में काफ़ी दिनों तक असफल रही। कुछ दिनों बाद कक्षा 6 की सपना ने इस पुस्तक को चुना और पढ़ा। सपना ने इस पुस्तक से पढ़कर दो कहानियाँ सुनाईं। वह श्रोताओं के मन में कहानियों के ज़रिए जीवन में कठिनता-भरे निर्णय ले पाने में सक्षम होने, दूसरे के जीवन की कठिनाइयों को महसूसे कर सकने और न्याय की ज़रूरत को अपने शब्दों के ज़रिए उभार पाई। इसके बाद यह पुस्तक भी हर बच्चे के हाथ में पहुँची, और बड़े बच्चों ने भी इस पुस्तक को उत्साह के साथ पढ़ा।
- एक छोटी-सी पुस्तक *मुत्थू के सपने* थोड़ी पुरानी मटमैली-सी हल्के रंग की किताब थी जिसे हर कोई देखकर

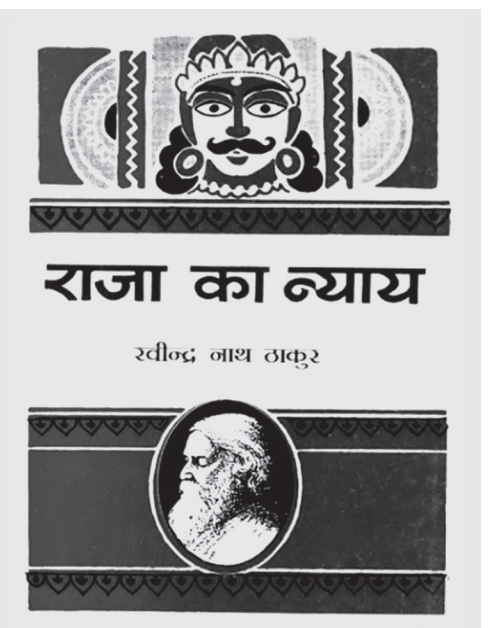

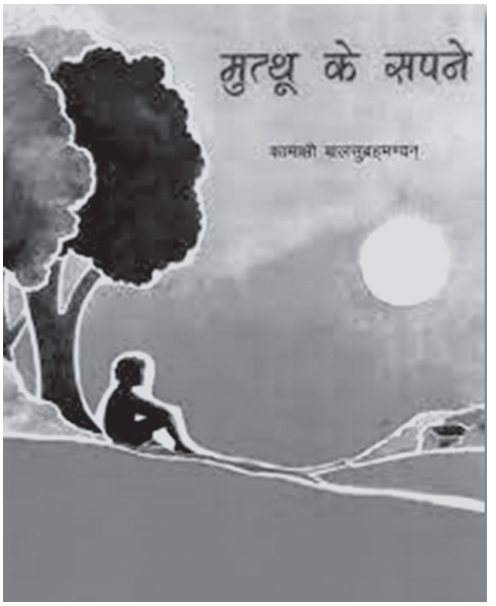

कोने में छोड़ देता, पर आकाश ने इसे पढ़ना चाहा। दो से तीन बार उलट-पलट कर देखने के बाद आकाश ने इसे अपने साथ ले जाने का निर्णय लिया। अगले दिन इस सवाल के साथ आकाश ने समूह में अपनी बात रखी, "दीदी, क्या सारे सपने पूरे हो सकते हैं?" आकाश के इस सवाल ने सभी का ध्यान खींचा। बातचीत हुई कि सपने पूरे हो सकते हैं। लेकिन यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि सपने में कितनी वास्तविकता है, व्यवहारिकता है, और उसे पूरा करने के लिए क्या हमने अपनी ओर से पूरी कोशिश की है!

आकाश ने इस पुस्तक की पूरी कहानी साझा करते हुए कुछ बिन्दुओं का ध्यान केन्द्रित किया : "दीदी, मुत्थू अकेला होकर भी कभी अकेला नहीं होता था! उसके पास सोचने के लिए ढेरों बातें होती थीं। पर हम ऐसी बातों से जल्दी ही बोर हो जाते हैं, न!" मुझे लगा, शायद इस बात के ज़रिए आकाश हम सबपर सवाल उठा रहा था। उसके मन में यह सवाल भी था कि अपने सवालों में ही खोया रहने वाला मुत्थू क्या बना होगा! पर अब आकाश के पास इस सवाल के कई जवाब भी थे।

- कक्षा 7 की अर्चना ने प्रेरित करने पर अपने लिए संजीव ठाकुर द्वारा लिखित *बड़ों का बचपन* पुस्तक को पढ़ने के लिए चुना। पुस्तक के मोटे व बहुत बड़े रूप में दिखने के चलते अर्चना ने अनमने ढंग से इसे ले तो लिया, पर अगले दिन उसमें ग़ज़ब का उल्लास था। उसने बेहद मासूमियत के साथ यह बात रखी, "हमारी तरह बड़े लोगों का बचपन भी इतना मज़ेदार होता होगा, ये तो मैंने सोचा ही नहीं था!" उसने अपने शब्दों के ज़रिए चार्ली चैपलिन के जीवन संघर्ष को उभारा, "अपनी मरती हुई माँ को देखकर भी उसे स्टेज पर मुस्कुराना पड़ा। वो ऐसा कैसे कर पाया होगा! बिना बोले सबको हँसाने वाला चार्ली ख़ुद कितने दुःख में रहा होगा!" अर्चना के शब्द व चेहरे के हाव-भाव श्रोताओं को बाँध पाने में सफल रहे। यहाँ अर्चना इस पठन

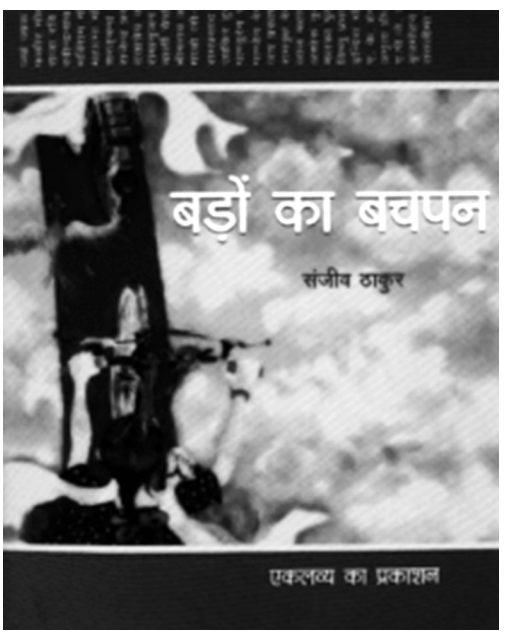

के ज़रिए जीवन की जटिलता और वास्तविकता के पलड़ों के बीच तोल-मोल करती नज़र आई।

अर्चना से प्रेरित होकर निकिता ने भी इसी पुस्तक से एक संस्मरण 'मैं माँ के सपने पूरे करना चाहता था' पढ़ा। अगले दिन निकिता ने समूह में अम्बेडकर की बचपन की घटनाओं को साझा किया। अम्बेडकर ने अपने बचपन में कितना भेदभाव सहा, इस मूल भाव ने सभी बच्चों को मंत्रमुग्ध-सा कर दिया। फिर समूह में इस पूरे अनुभव को दोबारा पढ़ा गया। अर्चना भाव-विभोर होकर बोली, "जूते-चप्पलों के पास बैठकर पढ़ने की शर्त ने नन्हे अम्बेडकर को कितना दुःख दिया होगा! माँ यह सोचकर मन-ही-मन रो पड़ी।" विश्लेषण करते हुए अर्चना कहती है, अम्बेडकर फिर भी वहाँ बैठकर पढ़ने लगा, क्योंकि उसे पता था कि इस अपमान के बारे में सोचने के बजाय पढ़ना ज़्यादा ज़रूरी है! पर उन माता-पिता को यह सोचकर कैसा लगा होगा कि उनके बच्चे के पास दूसरे बच्चों के जूते-चप्पलों के नज़दीक बैठकर पढ़ने के अलावा और कोई चारा ही नहीं है! उनका दिल तो इस दुःख से फट ही गया होगा! अर्चना के शब्द सभी पर अपना प्रभाव छोड़ रहे थे। सरमा बोली, "दीदी, मैं भी पहले ऐसे ही सोचती थी और दूसरों को छोटा समझती थी। लेकिन जब हम स्कूल में दूसरों के साथ खाना खाते, मुझे भी अच्छा लगने लगा। मुझे तो पहले पता ही नहीं था कि सब बराबर हो सकते हैं, और ये तो बहुत अच्छी बात है।" इसके बाद अन्य बच्चों ने भी अपने अवलोकन जोड़े, जिनमें उन्होंने पाया कि लोग किस-किस तरह से भेदभाव करते हैं।

बच्चों ने ऐसी कई किताबें चुनीं और पढ़ीं। सभी बच्चों ने जब कोई-न-कोई पुस्तक पढ़ ली होती, तब यह बात होती कि अब जो भी पढ़ा है, उसमें से अपना कोई पसन्दीदा हिस्सा, जो मन को छूने वाला लगा हो, उस हिस्से को सभी के

साथ सभी के साथ अपने शब्दों में साझा करने का मौक़ा उन्हें ज़रूर देना है।

बच्चों को किसी कविता संग्रह से 'मेरी दुनिया के तमाम बच्चे' कविता मिली। जब आकाश ने इसे पढ़कर समूह में सुनाया, सभी को ये कविता अच्छी लगी। कविता संग्रह से लेखक अदनान द्वारा लिखित यह कविता पढ़ने के बाद आकाश, यामिनी, बुल्ला, कुलदीप, सपना, आदि बच्चों ने उसपर अपनी समझ को कुछ इस तरह साझा किया कि आख़िर में सुनने वाले भी उस कविता का हिस्सा होने लगे।

- आकाश : "ये कविता हमे भेदभाव के बारे में बताती है। नफ़रत के बजाय प्यार से जीने की बात करती है। अपनी ग़लती को मानने की सलाह देती है। जब लोगों के मनों के बीच दीवार खड़ी हो जाती है, उसे गिराने में बन्दूक काम नहीं आ सकती।

- पवन : ये कविता बच्चों के बारे में है। बच्चे कभी नफ़रत नहीं करते, बड़े उन्हें नफ़रत करना सिखाते हैं।"

- यामिनी : "जो लोग बच्चों को नफ़रत करना सिखाते हैं, ये बच्चे उन नफ़रत की दीवारों में छेद करेंगे और उन छेदों में प्यार भर देंगे। माता-पिता के झगड़ों को मिटा देंगे, छोटे-बड़ों के मन को प्यार से भर देंगे, और बड़ों के मन से जात-पात के कारण बनी दूरियों व भेदभाव को मिटा डालेंगे।"

- कुलदीप : "अभी हमारे यहाँ मीणा जाति के लोगों को ज़्यादा आरक्षण मिल रहा है, इसलिए ये लोग दूसरों को चिढ़ाते हैं कि हमारी तो जल्दी नौकरी लग जाएगी। ये बात सुनकर दूसरों को अच्छा नहीं लगता, और वे उनसे नफ़रत करने लगते हैं। इस तरह जब किसी एक देश के लोग दूसरे देश पर अपने बारूद के टैंक छोड़ देंगे, ये बच्चे उन टैंकों को जाकर बालू से भर देंगे ताकि वो हथियार काम के न रहें, बेकार हो जाएँ। बन्दूकों को कहीं मिट्टी में छुपाकर आ जाएँगे ताकि कोई किसी को नुक़सान न पहुँचा पाए।"

कुछ अन्य बच्चों की प्रतिक्रियाएँ भी कुछ इस तरह आईं। मसलन,

- यह कविता हमें भेदभाव के बारे में बहुत कुछ कहती है। हम मिलजुलकर कैसे रहें, नफ़रत के बजाय प्यार के रास्ते बनाएँ, जब हमारे मन में दूसरों के लिए दीवारें खड़ी हो जाती हैं, वो बन्दूकों से नहीं टूटने वालीं। उन्हें ख़त्म करने के लिए ज़रूरी है कि हम मन से अपनी ग़लतियों को मानें;

- ये कविता हमें बच्चों के बारे में यह बताती है कि बच्चे अपने बड़ों को देखकर छोटे-बड़ों में, जात-पात में, लड़का-लड़की में भेदभाव करना सीख जाते हैं। प्यार और समझदारी-भरा व्यवहार ही इन दीवारों को खोखला करेगा न कि कोई हथियार;

- दुश्मनी भी कई तरह की होती है, ग़रीब-अमीर, छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच, आदि;

- अलग-अलग जात के होने से लोग एक दूसरे के लिए मन में दूरियाँ रखते हैं, जिनके पास ज़्यादा पैसा और बड़ा घर होता है, वे मज़दूरी या बेलदारी करके जीवन यापन करने वालों को नफ़रत से देखते हैं, अपमानित करते हैं। उन्हें बात-बात पर नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं;

- कोई देश ज़्यादा तरक़्क़ी कर रहा होता है तब वह दूसरे देश के लोगों का फ़ायदा उठाता है। ये दूसरे देश के लोगों को कम पैसों में अपने यहाँ

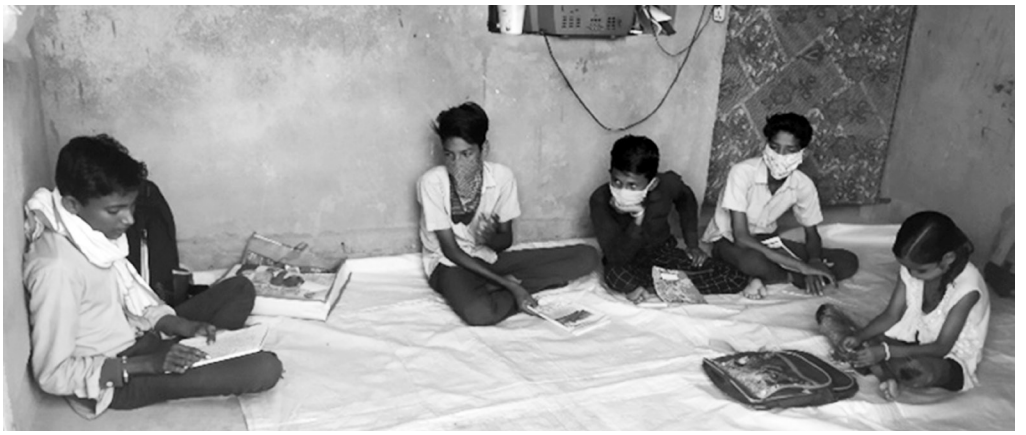

काम देकर उनका फ़ायदा उठाते हैं। एक तरह से वे देश उन्हें अपना ग़ुलाम बनाना चाहते हैं। ऐसे देश अपने फ़ायदे के लिए दूसरों को बन्दूकें और बारूद के टैंक सस्ते में बाँट रहे हैं। इस सब में उन्हें तो बस अपना फ़ायदा दिख रहा होता है, भले ही इससे पूरी दुनिया का नुक़सान हो। पर बच्चे उनके मंसूबों पर पानी फेर देंगे। वे इन सब हथियारों को मिट्टी में छुपा देंगे, ताकि कोई किसी को न तो नुक़सान पहुँचा सके न ही किसी की जान ले सके; आदि।

मैं हैरान थी कि बच्चे कविता को समझ गए थे और उसपर अपने इतने सधे हुए से विचार रख रहे थे!

मैंने उनसे पूछा, "कवि अदनान ने अपनी बात लिखी। अब यही बात तुमसे पूछी जाए कि तुम सब हमारी दुनिया के बच्चों के बारे में क्या-क्या सोचते हो। और जब तुम बच्चों के बारे में सोचने लगते हो, तुम क्या महसूस करते हो?" इस प्रश्न पर हर बच्चे ने कुछ-न-कुछ व्यक्त किया :

हम बच्चे,

बुरा करने वाले के साथ भी

करेंगे अच्छा व्यवहार।

लोगों के बुरे मंसूबे को नाकामयाब कर देंगे

सड़कों में गड्ढे बना देंगे

ताकि ड्रग्स से भरे ट्रक अटक जाएँ वहीं

न जा सकें एक से दूसरे शहर तक

ताकि ड्रग्स का ज़हर सब जगह न फैला सकें।

बच्चे किसी से नफ़रत नहीं करते,

बड़े लोग उन्हें नफ़रत करना सिखा देते हैं।

उन्हें पता ही नहीं चलता है

कि वे कितना ग़लत कर रहे हैं।

जब हमारे मन में दूसरों के लिए दीवारें खड़ी हो जाती हैं

वो बन्दूकों से नहीं टूटने वालीं,

उन्हें ख़त्म करने के लिए ज़रूरी है

हम मन से अपनी ग़लतियों को मानें।

पर हम बच्चे उन नफ़रत की दीवारों में

एक दिन छेद करेंगे

और उनमें प्यार भर देंगे।

लड़ाई से मन में दीवार खड़ी हो जाती है,

बच्चे बड़ों की इन मन की दीवारों को तुड़वाकर

उन्हें गले मिलवा देंगे एक दिन!

फिर सब नफ़रत की दीवारें ढह जाएँगी।

भेदभाव मिटाने के लिए सब उलट-पुलट कर देंगे

किसी को बुरा नहीं बनने देंगे

खुशहाली लाने के लिए

इन हथियारों को खिलौनों में बदल देंगे।

हम बच्चे दुनिया की

हर चीज़ को महसूस करना सीखेंगे,

जिनपर बड़े ध्यान नहीं देते

और रोक देते हैं हमें

जब पूछते हैं कुछ भी

चुप रहने को कह देते हैं हमें

और हमारे सवालों को भी!

जाने क्यों नहीं देना चाहते वो हमारी सब बातों का जवाब!

पर हम रुकेंगे नहीं

हर किसी को अपना दोस्त बनाएँगे,

जो हमारी जात के नहीं हैं,

यह बात भूलकर हम

उनके दर्द जानने की कोशिश करेंगे,

उनकी तक़लीफ़ों को उनके मन से बाहर निकाल लाएँगे,

उनके मन की सब बात हम जान जाएँगे

और फिर उनकी नफ़रत में

थोड़ा हमारा प्यार मिला देंगे।

जिनमें दुश्मनी है

उनके बीच कुछ ऐसा कर देंगे

कि दुश्मनी को भुलाकर

दोस्तियाँ बनाने पर मजबूर हो जाएँ।

पर हम बच्चे तो हर किसी को ज़रूर पानी पिलाएँगे,

हम जाति, धर्म की परवाह नहीं करेंगे

सबसे मिलेंगे बेफ़िक्र होकर

भेदभाव की दीवारों में छेद बनाकर सबको बताएँगे

कि देखो इन छेदों के आर-पार

सब जगह दुनिया, लोग, हम सब

एक जैसे ही तो हैं

फिर हम सबसे बोलेंगे,

उन्हें एक समान समझकर,

गले लगाते जाएँगे,

इससे दुनिया की सारी जंग रुक जाएँगी।

जो हमें नफ़रत करना सिखा रहे हैं,

हम उन्हें प्यार में बदल डालेंगे

हिस्सों में बँटी हुई दुनिया को हम फिर से मिला देंगे

ताकि सबको पता चल जाए

इस ख़ूबसूरत धरती पर हवा, धूप, रोशनी सबकी है।

हथियारों को बालू भरकर मिट्टी में दबा देंगे ताकि सब बेकार हो जाएँ,

यहाँ जंग का नाम न रहे,

कोई किसी को उजाड़ न सके,

जहाँ कोई किसी अपने को नहीं खोएगा।

जहाँ बँटवारा नहीं होगा, सब होंगे एक समान

सब अपने दोस्त ख़ुद चुन सकेंगे,

एक दूसरे से खुल सकेंगे,

ले सकेंगे सब अपने फ़ैसले ख़ुद,

दूसरों से लड़ाई के बाद भी हम जाएँगे उनके पास,

अपने लिए माफ़ी माँगने,

बदले में दोस्ती देने,

और पाने उनके दिलों में अपने लिए छोटी-सी जगह।

समझेंगे बच्चे सारी ही दुनिया को अपना घर,

चले जाएँगे वे किसी के भी पास,

मन की दीवारों को मिटाकर

बनाएँगे इस धरा को और भी सुन्दर,

जहाँ न कोई जंग होगी

न कोई बँटवारा!

बच्चों की इन प्रतिक्रियाओं को एक समेकित रूप में देखने पर मैं एक बार फिर हैरान हुई। काम के बीच जब भी बच्चों को सुन पाने का मौक़ा बनता है, हर बार इस मौक़े को मैं ले लेना चाहती हूँ। जब भी बच्चों को सुनती हूँ, वे हर बार मुझे सोचने पर मजबूर कर जाते हैं। मेरे मन में अपनी एक नई और अलग तस्वीर बना जाते हैं जो पहले से और बेहतर होती है। इस कविता में बच्चों ने बड़े गहरे निष्कर्ष गढ़ लिए। बन्दूकों को कहीं मिट्टी में छुपाकर आ जाएँगे, ताकि कोई किसी को नुक़सान ही न पहुँचा पाए। साथ ही ये बात, "बच्चे कभी नफ़रत नहीं करते, बड़े उन्हें नफ़रत करना सिखाते हैं," कहते हुए वे दुनिया में ऐसी विसंगतियों के लिए बड़ों को भी ज़िम्मेदार पाते हैं जो शायद हम सबका ही यथार्थ है। शायद सभी बच्चे इन कठोर सच्चाइयों को भाँप लेते हैं। ऐसे में, मैं ख़ुद को इस उम्मीद से बँधा पाती हूँ कि बच्चे इस दुनिया को बेहद ख़ूबसूरत सम्भावनाओं से भर सकते हैं। शायद हम बड़े ही जाने-अनजाने, उन्हें ये मौक़े देने में नाकामयाब रहते हैं। बच्चे दुनिया को सम्पूर्णता में देख पाते हैं। इस समझदारी-भरे एहसास को हासिल करने के लिए उनके वयस्क होने का इन्तज़ार करना ज़रूरी नहीं है। वे बहुत बारीक़ी से परत-दर-परत बड़ों की दुनिया की जटिलताओं को समझ लेते हैं और उसी संजीदगी के साथ उसपर ग़ौर करते हैं। कई बार लगता है मुझे भी बच्चों से ये लचीलापन सीखना चाहिए जो गाहे-बगाहे बड़े होने के इस दौर में हम कहीं खो देते हैं।

संवाद के इसी क्रम को अर्चना ने यह कहकर समेकित किया, "मैंने कभी सोचा ही नहीं था कि परदे पर पूरी दुनिया को हँसा देने वाले मशहूर किरदारों के जीवन में भी ऐसा होता होगा! हमारे बड़ों के जीवन में भी वैसा ही कुछ घटता है जो हमारे साथ अभी हो रहा है, पर हम उसपर ज़्यादा ध्यान नहीं देते। फिर तो हम भी अपने बारे में लिख सकते हैं। लेकिन जब हम लिखने बैठते हैं, हमें याद ही नहीं आता कि हम क्या लिखें?" इसपर समूह में यह बात हुई कि कुछ भी ऐसा, जो हम सबको बताना चाहते हैं, कह देना चाहते हैं, जो घटना हमारे मन के बेहद क़रीब रही है, हमें उदास कर जाती है, ख़ुशी देती है, या बार-बार सोचने पर मजबूर करती है, ऐसे अनुभव या घटनाएँ जिनके बारे में हमारे मन में सवाल उठते हों, कुछ भी ऐसा जिसके बारे में हम कुछ ज़ाहिर करना चाहते हों चाहे वह हमारी आपत्ति

ही हो, आदि सबकुछ लिखा जा सकता है। पर ज़रूरी यह है, हम जो भी ख़ुद लिखें उसे ख़ुद से पढ़कर ज़रूर देखें। हम लेखक भी बनें और पाठक बनकर भी ज़रूर देखें, तब अपने लेखन के बारे में ज़रूर पता चलेगा। इसके बाद कुछ बच्चों ने ख़ुद से कुछ लिखकर देखने का प्रयास किया और समूह में सभी के साथ साझा किया।

बच्चों की मान्यताएँ

किताबों की दुनिया में दाख़िल होने पर जब बच्चे किताबों को छूते, पलटते, महसूस करते हैं, तब कहीं-न-कहीं वे उन्हें अपने क़रीब पाते हैं। काम के दौरान पुस्तकों से दोस्ती के इस दौर में बच्चों की कुछ अपनी मान्यताएँ भी टूटती-सी नज़र आईं–

- हर सुन्दर चित्रों वाली किताब या सुन्दर दिखने वाली किताब हमेशा ही अच्छी हो, यह ज़रूरी नहीं है। बिना चित्रों वाली किताब, जिसे हम पहले बेकार-सी मानकर छोड़ देते थे, भी काफ़ी मज़ेदार हो सकती है।
- बिना चित्रों वाली किताब हमें ऊपर से देखने पर उबाऊ लगती है, और कभी-कभी हम उसे बहुत कठिन मानकर छोड़ देते हैं, लेकिन जब पढ़ना शुरू करते हैं तब पता चलता है कि ये तो बिलकुल कठिन नहीं थी।
- अंकिता कहती है, "हमें अलग-अलग तरह की किताबें पढ़नी चाहिए जिससे हमें पता चल सके कि लोग कितनी अलग-अलग तरह से लिखते हैं!"
- सरमा मानने लगी है कि किताबों में केवल कहानी, कविताएँ ही नहीं होती हैं। इनमें दुनिया की अलग-अलग जगहों, अलग-अलग लोगों के जीवन के क़िस्से भी मिलते हैं।
- मानवी बताती है, "हम लोगों का जीवन भी तो एक कहानी की तरह ही चलता है।"
- बुल्ला कहता है, "हम हर जगह जा तो नहीं सकते, पर किताबें हमें वहाँ ले जा सकती हैं।"
- आकाश का मानना है, "अगर किताबें न होतीं, हम कुछ लोगों से कभी न मिल पाते। किताबें हमें उन लोगों से भी मिला देती हैं जो इस दुनिया में नहीं हैं।"

बच्चों की ये सारी बातें मुझे सफ़दर हाशमी की कविता 'किताबें करती हैं बातें' को साकार करती नज़र आती हैं।

एक शिक्षक की नज़र से

बच्चों के साथ रहे ये अनुभव इस समझ को और मज़बूती देते हैं कि पुस्तकें सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में कई सम्भावनाएँ खोल

देती हैं। इनमें बच्चे अपनी रुचि, अपनी गति के साथ चलते अपनी समझ को विस्तार देने की ओर बढ़ते हैं, और वैचारिक रूप से समृद्ध होते हैं। बच्चे पुस्तकों के मूल भाव या इनसे जुड़ते जीवन के क़िस्सों को अपने शब्दों में पिरोकर प्रस्तुत करने का मौक़ा लेते हैं। बच्चों के अनुभव चिन्तन को जन्म देते हैं जिसमें बच्चे अपने विचारों को तार्किकता की कसौटी पर रखकर तोलते हैं, ख़ुद के सही-ग़लत, उचित-अनुचित होने के भाव को गढ़ते हैं, कई बार ख़ुद पर और दूसरों पर सवाल उठाते हैं, घटनाओं में छुपी संवेदनाओं और मर्म को ढूँढ़ते हैं, उन्हें पढ़ना सीखते हैं, अपने लिए नए विचार गढ़ते हैं और उनके तर्क भी। यही नहीं, कहते समय शब्दों के चुनाव में भी उनका अपना प्रभाव दिखता है। ये सारे अनुभव मुझे बच्चों को और सहृदय होते हुए देख पाने का मौक़ा देते हैं।

विशाल, जीवों के प्रति संवेदनशील नज़र आता है। पवन, समाज के जटिल ताने-बाने से उठी टीस को महसूस करता है। वहीं बुल्ला जीने के दायरों की ज़रूरत को रखता है। काम की इस पूरी प्रक्रिया में मुझे बच्चों के और भी क़रीब जा पाने का मौक़ा मिला, और बच्चों में सबकुछ कह देने की सहजता को मैं काफ़ी क़रीब से महसूस कर पाई। यहाँ हम बच्चे और टीचर साथ में बैठकर खाना खाते हैं, कोई किसी के साथ भेदभाव नहीं करता। मुझे लगता है बच्चे वो सब पढ़ लेते हैं जो हमारे आसपास चल रहा है। बच्चे बेहतर इंसान कैसे बन पाएँ, इसमें हम सभी बराबर के हिस्सेदार हैं। लेकिन एक औपचारिक संस्था होने के नाते स्कूल की यह एक अहम ज़िम्मेदारी बन जाती है कि हम इस दिशा में कितना आगे बढ़ पाए हैं, ये सवाल हम ख़ुद से पूछते रहें। बतौर शिक्षक मुझे यह लगता है कि स्कूल की प्रक्रियाएँ इसमें काफ़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अगर हम बच्चों को उनकी उम्र, मानसिक स्तर, रुचि के अनुसार कुछ मज़ेदार चुनौतियाँ दे पाएँ, उनकी भागीदारी को काफ़ी हद तक बढ़ाया जा सकता है। साथ ही, इस दिशा में हम वयस्कों का बच्चों के प्रति नज़रिया भी काफ़ी मायने रखता है, जिससे हम उनपर भरोसा कर पाएँ, उन्हें उनकी कमज़ोरियों और क़ाबिलियत के साथ वैसे ही स्वीकार कर पाएँ, जैसे वे हैं। तभी बात बनती नज़र आती है।

अलका तिवारी ने शिक्षा में अपने काम की शुरुआत ज़िला बारां, राजस्थान में दिगंतर संस्था द्वारा चलाए जा रहे सहरिया समुदाय के बच्चों से जुड़े सन्दर्भशाला प्रोजेक्ट से की। फिर उन्होंने बोध शिक्षा समिति में विज्ञान शिक्षक के रूप में कार्य किया। वे 2012 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में विज्ञान की टीचर एजुकेटर के रूप में जुड़ी हैं। अलका 2019 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के टोंक स्कूल में विज्ञान और भाषा के शिक्षक के रूप में कार्य कर रही हैं। उन्हें शुरुआती कक्षाओं के बच्चों के साथ काम करना अच्छा लगता है।

सम्पर्क : alka.tiwari@azimpremjifoundation.org